*उपभोक्ता मूल्य सूचकांक: एकीकरण विधि मायने रखती है**

प्रज्ञा दास और आशीष थॉमस जॉर्ज द्वारा

भारत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) संकलन की वर्तमान पद्धति में मद स्तर के सूचकांकों के लिए सभी क्षेत्रों के सूचकांकों (ग्रामीण/ शहरी) तथा राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) के साथ-साथ उप-समूह/ समूह और अखिल भारतीय स्तर के लिए सीपीआई का एकत्रीकरण शामिल है। एकत्रीकरण की यह पद्धति कभी-कभी मौद्रिक नीति के लिए सूचकांक के उपयोग के लिए चुनौतियां पैदा करती है क्योंकि इस पर आधारित मुद्रास्फीति, वस्तुओं और सेवाओं की खुदरा कीमतों में बदलाव के अलावा, एकत्रीकरण पद्धति से निकलने वाले डेटा किंक को दर्शाती है - जनवरी और फरवरी 2023 के सीपीआई प्रिंट इसके नवीनतम उदाहरण हैं। यह आलेख हाल के समय में इसकी बढ़ती घटनाओं और इसकी मात्रा के बारे में चर्चा करता है। यह सुझाव देता है कि अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप एक वैकल्पिक एकत्रीकरण विधि, शून्य कीमतों का उचित प्रबंध और सामयिक आधार वर्ष संशोधन नीति निर्माता की चिंताओं को दूर कर सकते हैं।

I. भूमिका

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई), घरों में उपभोग या अधिग्रहण की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की प्रतिनिधि समूह की कीमतों में उतार-चढ़ाव को मापता है। सीपीआई राष्ट्रीय हेडलाइन खुदरा मूल्य मुद्रास्फीति माप का आधार बनता है और लोक नीति के लिए सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले संकेतकों में से एक है। केंद्रीय बैंकों के लिए, मौद्रिक नीति हेतु मुद्रास्फीति लक्ष्य अधिदेश आम तौर पर सीपीआई के संदर्भ में परिभाषित किए जाते हैं और इस प्रकार, प्रभावी मौद्रिक नीति निर्माण के लिए उच्च गुणवत्ता वाले सीपीआई महत्वपूर्ण हैं। भारत के राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (एनएसओ) सहित दुनिया भर में राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, राष्ट्रीय सीपीआई की गुणवत्ता और सटीकता के साथ-साथ उनकी अंतरराष्ट्रीय तुलनीयता को भी बहुत महत्व देते हैं।

एनएसओ द्वारा जनवरी 2023 के लिए अनंतिम सीपीआई प्रिंट (13 फरवरी 2023 को) जारी करने के बाद, उपयोगकर्ताओं द्वारा सीपीआई मद स्तर डेटा के भारित एकत्रीकरण से गणना करके प्राप्त की गई समग्र सीपीआई मुद्रास्फीति में और एनएसओ द्वारा जारी हेडलाइन सीपीआई मुद्रास्फीति में बड़े विचलन के परिणामस्वरूप सीपीआई में अपनाई गई एकत्रीकरण पद्धति पर काफी बहस हुई। 13 मार्च 2023 को फरवरी सीपीआई डेटा जारी होने के बाद भी बहस जारी रही। इस संदर्भ में, आलेख सीपीआई में प्रयुक्त एकत्रीकरण पद्धति और उसके प्रभावों पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। खंड II सीपीआई और इसकी संकलन पद्धति का अवलोकन प्रस्तुत करता है, खंड III सीपीआई प्राथमिक सूचकांकों के निर्माण से संबंधित मुद्दों से संबंधित है, खंड IV क्षेत्रवार (ग्रामीण/ शहरी) और राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश (यूटी)-स्तर और मद-स्तरीय एकत्रीकरण पद्धति तथा मुद्रास्फीति की गणना पर इसका प्रभाव के उपयोग पर प्रकाश डालता है। खंड V मुद्रास्फीति के विश्लेषण और पूर्वानुमान के लिए नीति निर्माता की दुविधा पर चर्चा करता है। खंड VI सीपीआई के भावी आधार वर्ष संशोधनों में विचलन को सुलझाने के लिए अनुशंसा प्रदान करता है और निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

I. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक - संकलन पद्धति का विहंगावलोकन

भारत में खुदरा मूल्य सूचकांकों का एक पुराना इतिहास है और औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई-आईडब्ल्यू) अक्टूबर 1946 से संकलित किया जा रहा है। सरकार ने सितंबर 1964 से कृषि श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक भी संकलित किया है। इसे नवंबर 1995 से कृषि मजदूर (सीपीआई-एएल) और ग्रामीण कामगारों (सीपीआई-आरएल) के लिए अलग-अलग सूचकांकों में विभाजित किया गया था। राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग, 2001 (अध्यक्ष: डॉ. सी. रंगराजन) की अनुशंसा के बाद उपभोक्ता कीमतों का एक अर्थव्यवस्था व्यापी मानदंड अस्तित्व में आया। अखिल भारतीय सीपीआई शृंखला जनवरी 2011 से आधार वर्ष 2010=100 के साथ शुरू हुई। बाद में आधार वर्ष को संशोधित कर 2012 कर दिया गया और नई आधार शृंखला का डेटा जनवरी 2013 से उपलब्ध है।[1]

^ लेखक मौद्रिक नीति विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक से हैं। इस आलेख को तैयार करने में डॉ. राजीव रंजन द्वारा प्रोत्साहन देने के लिए लेखक उनके आभारी हैं। श्री जॉइस जॉन और संपादकीय बोर्ड से प्राप्त टिप्पणियों के लिए कृतज्ञ हैं। इस आलेख में व्यक्त विचार लेखकों के हैं और भारतीय रिज़र्व बैंक के विचारों को नहीं दर्शाते हैं।

[1] नएसओ ने संशोधित आधार वर्ष के लिए जनवरी 2011 से शुरू होने वाली पिछली शृंखला भी प्रदान की।

अखिल भारतीय सीपीआई का दायरा

एनएसओ[2] द्वारा अखिल भारतीय सीपीआई शृंखला का निर्माण तीन क्षेत्रों के लिए किया जाता है - (i) ग्रामीण (शृंखला को सीपीआई-ग्रामीण कहा जाता है), (ii) शहरी (सीपीआई-शहरी), और (iii) संयुक्त (ग्रामीण + शहरी, सीपीआई-संयुक्त कहा जाता है)। सीपीआई-संयुक्त सूचकांक अखिल भारतीय और सभी राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों के लिए अलग-अलग तैयार किया जाता है।

सीपीआई[3] शृंखला एनएसएस (राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण) के 68वें दौर के उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण (सीईएस), 2011-12 से अपने समूह की मदों का भार उठाती है। इन वस्तुओं को अंतरराष्ट्रीय मानक सीओआईसीओपी (उद्देश्य के अनुसार वस्तुओं की व्यक्तिगत खपत का वर्गीकरण) का उपयोग करके सीपीआई में वर्गीकृत किया गया है ताकि उचित रूप से भारतीय संदर्भ के अनुरूप बनाने के लिए थोड़ा समायोजन करते समय अंतरराष्ट्रीय तुलनीयता सुनिश्चित की जा सके।

अखिल भारतीय सीपीआई का निर्माण

सीपीआई शृंखला, प्रारंभिक सूचकांकों के संकलन के लिए ज्यामितीय माध्य का उपयोग करती है - एकत्रीकरण का निम्नतम स्तर और मूल्य सूचकांकों का निम्नतम स्तर - इसे मुख्य रूप से उन उत्पादों के लिए निर्मित किया जाता है जिनके लिए सीओआईसीओपी वर्ग के भीतर स्पष्ट व्यय भार उपलब्ध हैं। प्राथमिक सूचकांकों की गणना करने के लिए, एनएसओ कीमतों के ज्यामितीय माध्य के अनुपात या जेवन्स सूचकांक का उपयोग करता है, जो इसके सांख्यिकीय लक्षणों के संदर्भ में सबसे पसंदीदा मीट्रिक है (वर्मा, 2016)। सीपीआई के प्राथमिक सूचकांकों के निर्माण के विवरण पर खंड III में चर्चा की गई है।

प्राथमिक सूचकांकों को भार के रूप में आधार वर्ष के उपभोक्ता व्यय के साथ लासपेयर्स सूचकांक का उपयोग करके उच्च स्तर के सूचकांकों पर पहुंचने के लिए संयोजित किया जाता है। लासपेयर्स फॉर्मूलेशन (P_L) आधार मात्रा द्वारा भारित वर्तमान कीमतों को आधार मात्रा द्वारा भारित आधार कीमतों से विभाजित करके मापता है।

$$P_L = \frac{\sum_{i=1}^{n} p_i^t q_i^b}{\sum_{i=1}^{n} p_i^b q_i^b} \quad \ldots(1)$$

$$= \frac{\sum_{i=1}^{n} p_i^t q_i^b \times p_i^b q_i^b / p_i^b q_i^b}{\sum_{i=1}^{n} p_i^b q_i^b}$$

$$= \sum_{i=1}^{n} \frac{p_i^t}{p_i^b} \times w_i^b \quad \ldots(2)$$

जहाँ, $w_i^b = \frac{p_i^b q_i^b}{\sum_{i=1}^{n} p_i^b q_i^b}$ आधार अवधि *b* में मद *i* का भार है। यानी, अवधि *b* में मद *i* पर वास्तविक व्यय का हिस्सा।

p_i^b आधार अवधि *b* में मद *i* की कीमत है।

p_i^t अवधि *t* में मद *i* की कीमत है, और

q_i^b आधार अवधि *b* में मद *i* द्वारा बेची गई वस्तु की मात्रा है।

आमतौर पर, लासपेयर्स सूचकांक की आधार अवधि *b, 0* यानी संदर्भ अवधि के बराबर होती है। जैसा कि यूरोप के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक आयोग और अन्य के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (पीजीपीसीपीआई) 2009 के उत्पादन के लिए व्यावहारिक गाइड में उल्लेख किया गया है, भार आमतौर पर पहले की अवधि से लिया जाता है, यानी, *b* <0 से। ऐसा अक्सर होता है क्योंकि उपभोग व्यय सर्वेक्षणों से सीपीआई में प्रयुक्त व्यय भार को संकलित करने में एक वर्ष या उससे अधिक समय लग सकता है। इस प्रकार, सीपीआई में उपयोग किया जाने वाला समीकरण प्रभावी रूप से एक यंग या लोव सूचकांक या आमतौर पर प्रयोग किए जाने वाले पारिभाषिक शब्दावली के रूप में, एक लासपेयर्स-टाइप सूचकांक है।

दुनिया भर में अधिकांश सीपीआई लासपेयर्स-टाइप फॉर्मूलेशन (पीजीपीसीपीआई, 2009) को अपनाते हैं क्योंकि अधिकांश मूल्य सूचकांकों के लिए केवल आधार अवधि भार ही उपलब्ध होते हैं।

लासपेयर्स सूचकांक का लाभ यह है कि यह उपलब्ध सूत्रों में से अधिक पारदर्शी है और उपयोगकर्ताओं द्वारा इसे अधिक आसानी से समझा जाता है। चूंकि सीपीआई गैर-भारित प्राथमिक सूचकांकों का एक भारित एकत्रीकरण है, इसलिए प्राथमिक सूचकांकों का निर्माण महत्वपूर्ण है।

एनएसओ, कीमतें एकत्र करने के लिए 1181 ग्रामीण और 1114 शहरी बाजारों को कवर करता है और साप्ताहिक मूल्य भिन्नताओं का पता लगाने के लिए इन बाजारों को महीने के चार सप्ताहों में समान रूप से वितरित किया जाता है। वर्तमान सीपीआई का भार संदर्भ वर्ष जुलाई 2011-जून 2012 (एनएसएस 68वें दौर

---

[2] पूर्ववर्ती केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन (सीएसओ) और राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) को 2019 में राष्ट्रीय सांख्यिकी संगठन (एनएसओ) नामक एक इकाई में विलय कर दिया गया था।

[3] जब तक अन्यथा संकेत न दिया जाए, सीपीआई का अर्थ, अखिल भारतीय सीपीआई-संयुक्त सूचकांक होगा।

की संदर्भ अवधि) है और कीमत संदर्भ वर्ष (आधार वर्ष) कैलेंडर वर्ष 2012 है।

अनंतिम सीपीआई सूचकांक (उप-समूह/ समूह/ हेडलाइन) अखिल भारतीय, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ विभिन्न राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों के लिए हर महीने की 12 तारीख को जारी किए जाते हैं[4]। मद-स्तर पर अखिल भारतीय संयुक्त सूचकांक भी साथ में जारी किया जाता है। आगामी महीने के डेटा जारी करने के साथ एक महीने के सूचकांक को अंतिम रूप दिया जाता है।

III. प्राथमिक सूचकांक

प्राथमिक सूचकांक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की बुनियादी नींव हैं और मासिक सूचकांक पर पहुंचने के लिए आधार वर्ष भार पर एकत्रित किए जाते हैं (समीकरण 2)। ये भार तब तक स्थिर रहते हैं जब तक कि शृंखला को एक नए आधार पर संशोधित नहीं किया जाता है, यही कारण है कि सीपीआई को एक निर्दिष्ट आधार सूचकांक कहा जाता है। चूंकि एनएसओ मूल्य सापेक्ष p_i^t/p_i^b, में जेवन्स सूचकांक का उपयोग करता है, p_i^b और p_i^t में दोनों, क्रमशः आधार वर्ष b और संबंधित वर्तमान अवधि t में i^{th} मद के लिए अलग-अलग बाजारों से एकत्र किए गए मासिक मूल्यों के ज्यामितीय माध्य हैं।

एनएसओ उन वस्तुओं के विनिर्देश तय करता है जिनके लिए लोकप्रिय बाजारों की पहचान और इन बाजारों में विभिन्न वस्तुओं के लिए दुकानों/ आउटलेटों के चयन के बाद कीमतें एकत्र की जाती हैं। पण्य विनिर्देशों को संरचित उत्पाद विवरण (एसपीडी) के तहत परिभाषित किया गया है, जो ब्रांड, विविधता, इकाई और गुणवत्ता सहित इसकी विभिन्न विशेषताओं को निर्दिष्ट करके उत्पाद की विशिष्ट पहचान करता है (सीएसओ, 2014ए)।

मौसमी और अनुपलब्ध वस्तुएं: दुनिया भर में प्रथाएं

सापेक्ष कीमतों की गणना करते समय, सीपीआई संकलनकर्ताओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है - जिनमें से एक मौसमी उत्पादों के प्रबंध के संबंध में है। मौसमी उत्पाद वे उत्पाद हैं जो कुछ विशेष मौसमों के दौरान उपलब्ध होते हैं और वर्ष के बाकी दिनों में उपलब्ध नहीं होते हैं, उदाहरण के लिए, ताजे फल।

बहुपक्षीय एजेंसियों अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, और अन्य द्वारा पीजीपीसीपीआई, 2009 और *उपभोक्ता मूल्य सूचकांक निर्देशिका: अवधारणाएं और तरीके, 2020* मौसमी वस्तुओं से निपटने के दो वैकल्पिक तरीके प्रदान करते हैं: पहला, एक निश्चित भार दृष्टिकोण है, जो सीज़न से इतर महीनों में अभ्यारोपित मूल्य का उपयोग करते हुए सभी महीनों में मौसमी उत्पाद के लिए वार्षिक भार का उपयोग करता है। जबकि निश्चित भार दृष्टिकोण सैद्धांतिक रूप से एक निश्चित सीपीआई समूह के अनुरूप है, वहीं उत्पाद की कीमतें उपलब्ध नहीं होने पर अभ्यारोपण विधि के चयन पर समस्याएं होती हैं। दूसरी विधि, जो पीजीपीसीपीआई सुझाती है, वह मौसमी या परिवर्ती भार दृष्टिकोण है जहां विभिन्न महीनों में उत्पाद के साथ परिवर्तनशील भार जुड़ा होता है।

उपभोक्ता मूल्यों का सामंजस्यपूर्ण सूचकांक (एचआईसीपी) मौसमी भार विधि पर विचार करता है जिसमें सीजन के बाहर के मौसमी उत्पादों के लिए भार शून्य होता है या शून्य पर सेट किया जाता है - इस प्रकार, जब कोई विशेष उत्पाद सीजन से बाहर होता है, तो उसका भार शून्य होता है और जब कोई उत्पाद सीज़न में होता है, इसका भार वास्तव में देखी गई मात्रा से मेल खाता है (यूरोपीय संघ 2022)।

कुछ देश किसी ऐसी वस्तु की कीमत लगाते हैं जो सीजन से बाहर है और समान व्यय वर्ग (ऑस्ट्रेलिया, 2018 और कनाडा 2023) में करीबी विकल्प या वस्तुओं की कीमतों में देखे गए परिवर्तनों के आधार पर अनुपलब्ध है।

कुछ देश एक ही व्यय वर्ग में करीबी विकल्प या वस्तुओं की कीमतों में देखे गए परिवर्तनों के आधार पर किसी वस्तु की कीमत अभ्यारोपित करते हैं जो सीजन से बाहर है और अनुपलब्ध है (ऑस्ट्रेलिया, 2018 और कनाडा, 2023)।

एनएसओ परिवर्ती भार दृष्टिकोण का उपयोग करता है जिसमें जब मद मौसम में नहीं मिलती है, तब मद को उन महीनों में शून्य भार दिया जाता है और मौसम में उपलब्ध होने पर उत्पाद के मूल निश्चित भार का उपयोग किया जाता है। तथापि, यदि कोई गैर-मौसमी वस्तु अस्थायी रूप से स्टॉक में अनुपलब्ध हो जाती है और कोई मूल्य सूचित नहीं किया जाता है, तो एनएसओ निश्चित भारांक दृष्टिकोण को अपनाता है और उसी वस्तु के शेष बाजारों के लिए पिछले महीने की कीमतों के सापेक्ष, औसत कीमत को गुणा करके वर्तमान महीने की कीमत को अभ्यारोपित करता है, जहां वर्तमान और पिछले महीने दोनों की कीमतें उपलब्ध होती हैं। सीपीआई (शहरी) के मामले में शहर के भीतर और सीपीआई (ग्रामीण) के मामले में राज्य के भीतर कीमतें अभ्यारोपित की जाती हैं।

[4] अथवा 12 तारीख को अवकाश होने पर अगला कार्य दिवस।

सब्सिडी प्राप्त कीमतें- शून्य कीमत का मामला: दुनिया भर में प्रथाएं

उत्पादों की अन्य श्रेणी, जिनके लिए विशेष उल्लेख की आवश्यकता होती है, वे सरकार की सामाजिक सुरक्षा सेवाओं के तहत आने वाली वस्तुएं हैं। सीपीआई के तहत कवर किए गए उत्पाद आम तौर पर कीमत मुद्रित होती है, जिन पर परिवारों द्वारा अंतिम उपभोग व्यय किया जाता है। किसी उत्पाद की शून्य कीमत, वस्तुओं के रूप में मुफ्त सामाजिक हस्तांतरण के मामले हैं जिन्हें आमतौर पर सीपीआई के दायरे से बाहर रखा जाता है। बहुपक्षीय एजेंसियों द्वारा *उपभोक्ता मूल्य सूचकांक निर्देशिका: अवधारणाएं और तरीके, 2020* में चर्चा की गई है कि "सामाजिक हस्तांतरण को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, हालांकि, जब सरकारें और गैर-निरपेक्ष संस्था उनके लिए प्रभार लगाने (या समाप्त करने) का निर्णय लेते हैं ... परिवारों के लिए उनकी कीमतों में शून्य से कुछ धनात्मक राशि तक की वृद्धि, समूह की लागत में वृद्धि करती है और इसका सीपीआई द्वारा पता लगाया जाना चाहिए ... यदि कीमत कुछ धनात्मक राशि से शून्य तक कम हो जाती है, तो यह भी सीपीआई में परिलक्षित होना चाहिए। प्रश्न यह है कि उस मद के लिए भार से कैसे निपटा जाए। एक विकल्प शून्य कीमत का उपयोग करना और अगले अपडेट के दौरान भार समायोजित करना हो सकता है। एक अन्य विकल्प, वर्ग के भीतर अन्य वस्तुओं में भार को पुनर्वितरित करना हो सकता है। अंत में, यह निर्णय लिया जा सकता है कि सबसे अच्छा तरीका सभी वस्तुओं पर भार को व्यापक रूप से पुनर्वितरित करना होगा।

यूएस ब्यूरो ऑफ लेबर स्टैटिस्टिक्स (2020) भी प्रभार में किसी भी बदलाव के लिए यह मानता है कि जो सरकार मदों के लिए प्रभार लगाती है, जैसे कि राष्ट्रीय उद्यान में प्रवेश, सीपीआई के संकलन के लिए कीमत में इन-स्कोप परिवर्तन के रूप में। यदि सब्सिडी में कटौती की जाती है और किराया बढ़ाया जाता है, तो सीपीआई इसे मूल्य वृद्धि के रूप में प्रतिबिंबित करेगा। यूएस सीपीआई, हैंडबुक ऑफ मेथड्स के अनुसार असामान्य कीमत संचलन की सावधानीपूर्वक समीक्षा की जाती है और वैधता की जांच की जाती है। मूल्य सूचकांक सूत्र, शून्य कीमत (या मुफ्त) को संभाल नहीं सकता है, इसलिए, एक शून्य कीमत को बहुत छोटे, महत्वहीन शून्येतर कीमत में समायोजित किया जाता है।

जो सेवाएं पहले मुफ्त प्रदान की जाती थीं और बाद में शुल्क योग्य हो जाती हैं, उदाहरण के लिए यूके में 1998 में विश्वविद्यालय शुल्क की शुरुआत, दोहरी समस्याएं पैदा करती हैं। एक, आधार अवधि में कोई भार नहीं है (व्यय शून्य है) और दूसरा, कोई आधार अवधि कीमत नहीं है जिसके साथ मूल्य सापेक्ष बनाने के लिए नई कीमत की तुलना की जा सके। इसे ठीक करने के लिए, यूके ऑफिस ऑफ नेशनल स्टैटिस्टिक्स व्यय भार और मूल्य सापेक्ष के बजाय मात्रा और कीमत स्तरों के संदर्भ में लासपेयर्स सूचकांक के मानक सूत्रीकरण का उपयोग करता है। नए उत्पाद को ऐसे माना जाता है जैसे कि यह पहले से ही शून्य कीमत के साथ एक मौजूदा खंड (या मद) सूचकांक में शामिल था, लेकिन आधार अवधि में इसकी खपत के बराबर शून्येतर मात्रा के साथ। फिर सूचकांक को नए व्यय को लेने के लिए नई कीमत की शुरूआत के बिंदु से समायोजित किया जाता है (ओएनएस, 2019)। उनका निर्देशिका एक मौजूदा शून्येतर कीमत के शून्य हो जाने पर प्रबंध पर चर्चा नहीं करता है।

ऑस्ट्रेलियाई ब्यूरो ऑफ स्टैटिस्टिक्स (एबीएस) एक प्राथमिक सूचकांक सूत्र के रूप में समान रूप से भारित जीएम का उपयोग करता है। जीएम किसी वस्तु की कीमत के शून्य तक गिर जाने पर अवांछनीय परिणाम उत्पन्न करता है, उदाहरण के लिए, जैसा कि उस मामले में होता है जब सरकार किसी विशेष वस्तु या सेवा को पूरी तरह से सब्सिडी देने के लिए एक नीति पेश करती है। जहां नमूने में शून्य कीमत होने की संभावना है और जीएम का उपयोग करना अनुचित है, तो एबीएस आमतौर पर आरएपी (औसत कीमतों के सापेक्ष) सूत्र का उपयोग करता है, जिसमें मूल्य सापेक्षों के बजाय कीमतों का उपयोग किया जाता है। आरएपी फॉर्मूला कीमतों के अंकगणितीय माध्य का उपयोग करता है, न कि मूल्य सापेक्षों का (एबीएस, 2018)।

भारत में गेहूं, चावल, चीनी और मिट्टी के तेल को कवर करने वाले सरकार की सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के तहत रियायती दरों पर वितरित उत्पादों की कीमतें इस श्रेणी में आती हैं। एनएसओ लाभाथयों के तीन समूहों - गरीबी रेखा से ऊपर (एपीएल), गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) और अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई)[5] परिवारों के संबंध में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की वस्तुओं के मूल्य एकत्र करता है और संबंधित सार्वजनिक वितरण प्रणाली मद के आधार मूल्य के संबंध में मूल्य सापेक्षों का निर्धारण इन परिवारों के लिए अलग से किया जाता है। सीईएस, 2011-12 (सीएसओ, 2014 और 2014ए) के आंकड़ों से इन कार्डों वाले परिवारों की संख्या के आधार पर पीडीएस मद सूचकांक पर पहुंचने के लिए इन मूल्य सापेक्षों का भारित औसत लिया जाता है।

[5] चूंकि सीपीआई (2012=100) बाजार सर्वेक्षण, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) 2013 की शुरूआत से पहले किया गया था, इसलिए पूर्ववर्ती पीडीएस वर्गीकरण का उपयोग किया जाता है, इसलिए एनएफएसए की शुरूआत के बाद पीडीएस के लिए एएवाई, प्राथमिकता और गैर-प्राथमिकता वाले हाउसहोल्ड के नए वर्गीकरण का उपयोग किया जाता है।

जबकि एनएसओ, पीडीएस मदें शामिल करता हैं और उपभोक्ताओं द्वारा उनके लिए भुगतान किए जाने वाले रियायती मूल्य पर उनका मूल्यांकन करता है, सीपीआई पर सीएसओ की निर्देशिका में शून्य कीमत से निपटने पर कोई स्पष्ट चर्चा नहीं है (सीएसओ 2014 और 2014ए)। बहुपक्षीय एजेंसियों के पीजीपीसीपीआई 2009 निर्देशिका, जिस पर एनएसओ की सीपीआई पद्धति व्यापक रूप से तैयार की गई है, में सामाजिक सुरक्षा प्रणाली को मापने के लिए संकलनकर्ताओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर भी चर्चा की गई है और उल्लेख किया गया है कि "सामाजिक सुरक्षा प्रणाली भी जटिलताओं का कारण बन सकती है। सीपीआई संकलनकर्ता को सलाह दी जाती है कि वह सुविचारित निर्णय लेने के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए अपने नीति सहयोगियों के साथ निकट संपर्क में रहे कि सूचकांक में कौन से प्रभार शामिल किए जाने चाहिए और उन्हें कैसे मापा जाना चाहिए तथा डेटा के प्रासंगिक स्रोतों तक कैसे पहुंचा जाए।

IV. सीपीआई में एकत्रीकरण

एनएसओ द्वारा प्रकाशित अखिल भारतीय हेडलाइन सीपीआई पर पहुंचने के लिए सीपीआई में मूल्य सूचकांकों का एकत्रीकरण दो चरणों में किया जाता है। पहले चरण में मूल्य सूचकांक की गणना प्राथमिक समुच्चय के लिए की जाती है, जिसे मद स्तर सूचकांक के रूप में जाना जाता है। ये प्राथमिक सूचकांक एकत्रीकरण का निम्नतम स्तर हैं जहां कीमतों को मूल्य सूचकांकों में जोड़ा जाता है और जिसके लिए स्पष्ट व्यय भार उपलब्ध होते हैं। दूसरे चरण में, इन प्राथमिक सूचकांकों को लासपेयर्स सूचकांक सूत्र में भार के रूप में खपत व्यय का उपयोग करके उच्च स्तर के सूचकांक प्राप्त करने के लिए एकत्रित किया जाता है (खंड II देखें)। इस ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण विधि का उपयोग करके, एनएसओ द्वारा प्रत्येक राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश के लिए उप-समूह/ समूह/ सामान्य (या समग्र) सूचकांक, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए अलग-अलग संकलित किए जाते हैं। इन उप-समूहों, समूह और सामान्य सूचकांकों को भारित औसत के रूप में एकत्रित किया जाता है, जिसमें क्रमशः अखिल भारतीय उप-समूह, समूह और सामान्य सूचकांकों को संकलित करने के लिए उस मद के कुल व्यय में संबंधित राज्यों (और केंद्र शासित प्रदेशों) के हिस्से का उपयोग किया जाता है (सीएसओ, 2014)। अखिल भारतीय मद सूचकांकों के मामले में, प्रत्येक मद सूचकांक को भारांक के रूप में कुल मद व्यय का उपयोग करके, सभी क्षेत्रों और राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में मदों को एकत्रित करके तैयार किया जाता है। हम एकत्रीकरण की इस विधि को मूल्य सूचकांकों का क्षैतिज एकत्रीकरण (यानी, ग्रामीण/ शहरी और राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में) कहते हैं।

बहुपक्षीय एजेंसियों के *उपभोक्ता मूल्य सूचकांक निर्देशिका: अवधारणाएं और तरीके, 2020* में प्रस्तुत भौगोलिक और राष्ट्रीय सूचकांकों पर संवाद, और निर्देशिका के पहले के विंटेज में भी उल्लेख किया गया है कि सीपीआई की गणना अक्सर किसी देश के भीतर अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों के लिए की जाती है और फिर विशिष्ट क्षेत्रों में कीमतों में उतार-चढ़ाव के आधार पर एक राष्ट्रीय सूचकांक प्रदान करने के लिए एकत्रित किया जाता है। एकत्रीकरण दृष्टिकोण में प्राथमिक समुच्चय तैयार करना शामिल है जिसे भौगोलिक क्षेत्र में प्रत्येक मद सूचकांक के लिए भार का उपयोग करके जोड़ा जाता है ताकि क्षेत्र के लिए सभी मद सीपीआई प्राप्त किया जा सके। प्राथमिक मद सूचकांक तब राष्ट्रीय मद सूचकांक प्राप्त करने के लिए उनके क्षेत्र भार का उपयोग करके एकत्र किए जाते हैं। निर्देशिका के अनुसार, राष्ट्रीय मद भार का उपयोग करके यदि राष्ट्रीय मद सूचकांक को एकत्रित किया जाता है तो एक ही परिणाम प्राप्त होता है।

सीपीआई तैयार करने के लिए एनएसओ जिस लासपेयर्स-प्रकार सूचकांक का उपयोग करता है, उसके एकत्रीकरण में स्थिरता का एक वांछनीय गुण होता है। तदनुसार, क्या सूचकांकों की गणना क्षैतिज रूप से की जाती है, अर्थात सभी क्षेत्रों में और राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में मदों/ उप-समूह/ समूह/ समग्र रूप से; या वैकल्पिक रूप से, लंबवत रूप से, अर्थात, उप-समूह/ समूह/ समग्र सूचकांक उनके घटक मद सूचकांकों के भारित औसत को लेते हुए प्राप्त किए जाते हैं, उन्हें एक ही सूचकांक मान की ओर ले बढ़ना चाहिए। इस प्रकार, कोई फर्क नहीं पड़ता कि प्राथमिक मूल्य सूचकांक किस क्रम में एकत्रित होते हैं (पहले भौगोलिक स्तर पर और फिर उत्पाद वर्ग द्वारा, या विपरीत), कुल सूचकांक परिणाम समान होते हैं (सांख्यिकी कनाडा, 2023)।

उपरोक्त के अनुसार, राष्ट्रीय सीपीआई की गणना करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उत्पादों के समूह में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मूल्य और मात्रा प्रेक्षणों का पर्याप्त रूप से बड़ा नमूना शामिल होता है ताकि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय सीपीआई की गणना करने के लिए एक ही डेटासेट का उपयोग किया जा सके। भारत के मामले में, एनएसओ पद्धति और नमूना आकार इस आवश्यकता का अनुपालन सुनिश्चित करते हैं। यह क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर समानता बीजगणितीय रूप से भी स्थापित की जा सकती है।

एकत्रीकरण विधियों के आधार पर मूल्य सूचकांकों में विचलन की घटनाएं

अखिल भारतीय मद स्तर सूचकांकों के साथ-साथ उप-समूह/ समूह और समग्र सूचकांकों के लिए सभी क्षेत्रों और राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में सीपीआई के क्षैतिज एकत्रीकरण की वर्तमान पद्धति कई बार मौद्रिक नीति के लिए सूचकांक के उपयोग के लिए चुनौतियां उत्पन्न करती है क्योंकि इस पर आधारित मुद्रास्फीति वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में परिवर्तन के अलावा, एकत्रीकरण पद्धति से उत्पन्न होने वाली डेटा किंक को प्रतिबिंबित करती है।

क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण द्वारा संकलित मूल्य सूचकांकों के बीच विचलन मुख्य रूप से दो स्रोतों से उत्पन्न हो सकता है - अनुपलब्ध कीमतें (मौसमी या गैर-मौसमी कारणों से) और शून्य कीमत का उपचार (जैसा कि जनवरी और फरवरी 2023 सीपीआई प्रिंट में देखा गया था)। अनुपलब्ध कीमतों और/ या शून्य कीमतों के अभाव में, चाहे वस्तुओं और/ या क्षेत्रों में, क्षैतिज एकत्रीकरण विधि या ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण विधि द्वारा प्राप्त सूचकांक, पूर्णांकन के कारण मामूली मुद्दों को छोड़कर, समान होंगे।

अनुपलब्ध कीमतों के मामले में, एनएसओ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत प्रक्रियाओं का पालन करता है। जैसा कि खंड III में चर्चा की गई है, फलों/ सब्जियों जैसे मौसमी उत्पादों के लिए भार को पीजीपीसीपीआई द्वारा सुझाए गए परिवर्तनीय भार दृष्टिकोण का उपयोग करके निकाला जाता है, जैसे कि पहले चर्चा की गई थी। अन्य मौसमी वस्तुओं के लिए, जैसे कपड़े, और गैर-मौसमी वस्तुओं के लिए जो अस्थायी रूप से स्टॉक में नहीं हैं, कीमतों को निश्चित भार दृष्टिकोण का उपयोग करके निकाला जाता है।

ऐसी स्थितियों में जब कीमत शून्य हो जाती है, जैसे कि जब सरकार किसी विशेष वस्तु या सेवा को पूरी तरह से सब्सिडी देने का फैसला करती है, जिसके लिए अब तक नाममात्र मूल्य लिया जाता था, तो इसके प्रबंध पर एनएसओ निर्देशिका में कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है। पिछले अनुच्छेद में चर्चा के अनुसार, इस तरह के मामलों में भार अभ्यारोपण या मूल्य अभ्यारोपण किया जा सकता है। हालांकि, यह देखते हुए कि कीमत वास्तव में शून्य तक कम हो गई है, भार अभ्यारोपण को प्राथमिकता दी जा सकती है। अंत में, शून्य कीमत को ठीक एक शून्य कीमत के रूप में माना जा सकता है - और सूचकांक की गणना तदनुसार की जा सकती है।

अनुपलब्ध और शून्य कीमतों के संयोग पर चर्चा करने की आवश्यकता महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसे मामले में उपयोगकर्ताओं द्वारा ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण विधि के माध्यम से प्राप्त समग्र मुद्रास्फीति भिन्न हो सकती है और कभी-कभी विचलन न केवल प्रकाशित हेडलाइन सीपीआई मुद्रास्फीति से, बल्कि उप-समूह/ समूह मुद्रास्फीति के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकता है।

एकत्रीकरण पद्धति का प्रभाव

मदों को जब क्षैतिज (प्रकाशित) एकत्रीकरण से प्राप्त मदों से लंबवत रूप से एकत्र किया जाता है, सीपीआई सूचकांक में उसके विचलन के अस्तित्व पर दास और जॉर्ज (2017) में चर्चा की गई थी। यह ध्यान दिया गया कि सीपीआई के निर्माण के लिए क्षैतिज एकत्रीकरण की विधि अपनाई गई थी, लेकिन डब्ल्यूपीआई (थोक मूल्य सूचकांक) के लिए ऐसा नहीं किया गया था, जहां उप-समूहों/ समूहों/ हेडलाइन सूचकांकों को निचले स्तर के सूचकांकों के भारित एकत्रीकरण द्वारा प्राप्त किया जाता है, जिससे ऊर्ध्वाधर संकलननीयता सुनिश्चित होती है।

वर्ष 2015 से 2023 (फरवरी तक) की अवधि के लिए, मद स्तर सीपीआई डेटा के ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण का उपयोग करके प्राप्त समग्र मुद्रास्फीति के साथ प्रकाशित सीपीआई हेडलाइन मुद्रास्फीति (ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश स्तर के आंकड़ों के क्षैतिज एकत्रीकरण का उपयोग करके) की तुलना से पता चलता है कि मुद्रास्फीति में विचलन द्विदिश (चार्ट 1) और औसत (-) 3 आधार अंक (बीपीएस) (-) 27 आधार अंकों से (+) 25 आधार अंकों की सीमा में रहा है (अनुबंध सारणी ए1)।[6] मुद्रास्फीति दरों में विचलन की द्विदिशता विशेष रूप से कोविड-पूर्व अवधि के दौरान दिखाई देती थी। 2021 के बाद से, हालांकि, प्रकाशित और उपयोगकर्ता व्युत्पन्न हेडलाइन मुद्रास्फीति के बीच विचलन अधिक हो गया है (चार्ट 1)।

जैसा कि खंड II में उल्लेख किया गया है, विभिन्न एकत्रीकरण विधियों के कारण मुद्रास्फीति में विचलन के प्रमुख स्रोतों में से एक अनुपलब्ध कीमतें हो सकती हैं। जिन उप-समूहों को बार-बार मौसमी कीमतों में कमी का सामना करना पड़ता है, उनमें फल और सब्जियां उप-समूह शामिल हैं। अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं का अनुसरण करते हुए एनएसओ, कुछ फलों/ सब्जियों की मौसमी अनुपलब्धता के मामलों में निकटतम श्रेणी में अन्य वस्तुओं के

[6] प्रकाशित सीपीआई और उपयोगकर्ता द्वारा प्राप्त सीपीआई के बीच सूचकांक में विचलन (+) 0.51 अंक और (-) 0.11 अंक की सीमा में था (अनुबंध सारणी ए2)।

चार्ट 1: सीपीआई हेडलाइन मुद्रास्फीति - प्रकाशित और व्युत्पन्न

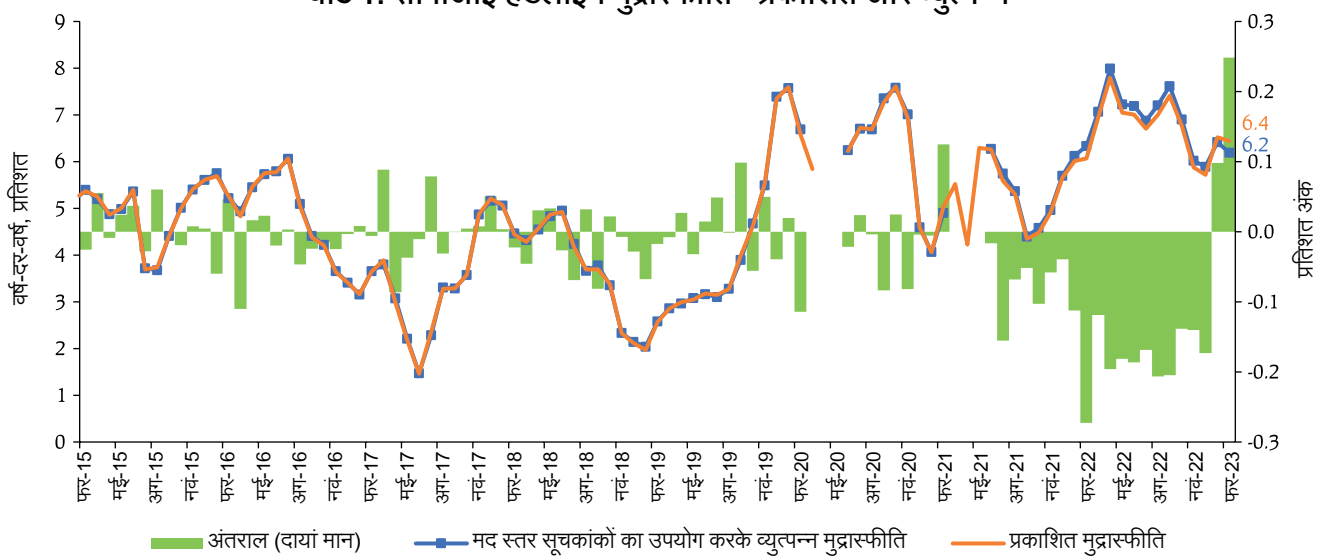

टिप्पणी: अंतराल, प्रकाशित मुद्रास्फीति से व्युत्पन्न मुद्रास्फीति को घटाने पर प्राप्त मान को दर्शाता है।
स्रोत: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ); और लेखकों के अनुमान।

बीच उनके भार को अभ्यारोपित करता है। इसलिए, वे उप-समूह व्युत्पन्न सूचकांकों के आधार पर प्रकाशित मुद्रास्फीति और मुद्रास्फीति के बीच विचलन दर्शाते हैं; हालांकि, ऐसा विचलन द्विदिशी और अव्यवस्थित है (चार्ट 2 और 3)।

जून 2021 के बाद से ईंधन समूह, प्रकाशित मुद्रास्फीति और व्युत्पन्न मुद्रास्फीति के बीच एक ही दिशा में बड़े व्यवस्थित विचलन का स्रोत रहा है (चार्ट 4)। इस मामले में, सीपीआई ईंधन मद सूचकांकों के ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण द्वारा प्राप्त मुद्रास्फीति, प्रकाशित ईंधन समूह मुद्रास्फीति के आंकड़ों से कहीं अधिक है। विस्तृत मूल्य-उद्धरण डेटा की उपलब्धता के अभाव में, विचलन के सटीक कारण की पहचान नहीं की जा सकती है, लेकिन यह पारंपरिक खाना पकाने में उपयोग होने वाले ईंधन (जैसे जलाऊ लकड़ी, कोयला, गोबर के उपले) के मूल्य उद्धरणों की अनुपलब्धता से आ सकता है, कि एक दशक पुराने आधार-वर्ष में व्यवहार में

चार्ट 2: सीपीआई फल मुद्रास्फीति - प्रकाशित और व्युत्पन्न

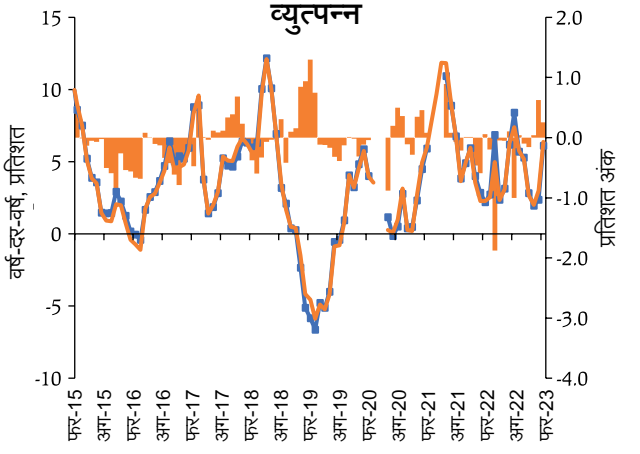

टिप्पणी: अंतराल, प्रकाशित मुद्रास्फीति से व्युत्पन्न मुद्रास्फीति को घटाने पर प्राप्त मान को दर्शाता है।
स्रोत: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ); और लेखकों के अनुमान।

चार्ट 3: सीपीआई सब्जी मुद्रास्फीति - प्रकाशित और व्युत्पन्न

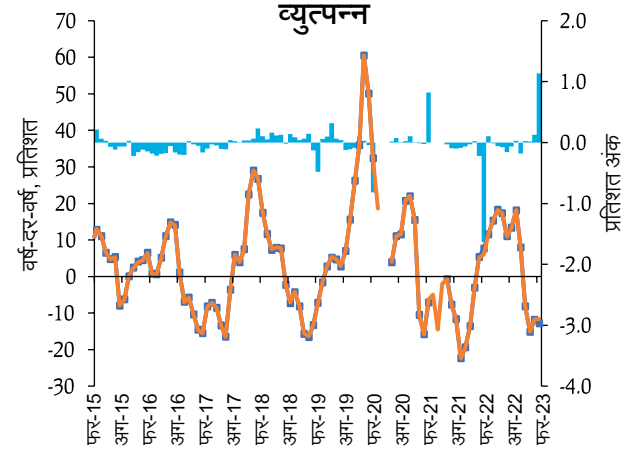

टिप्पणी: अंतराल, प्रकाशित मुद्रास्फीति से व्युत्पन्न मुद्रास्फीति को घटाने पर प्राप्त मान को दर्शाता है।
स्रोत: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ); और लेखकों के अनुमान।

चार्ट 4: सीपीआई ईंधन मुद्रास्फीति

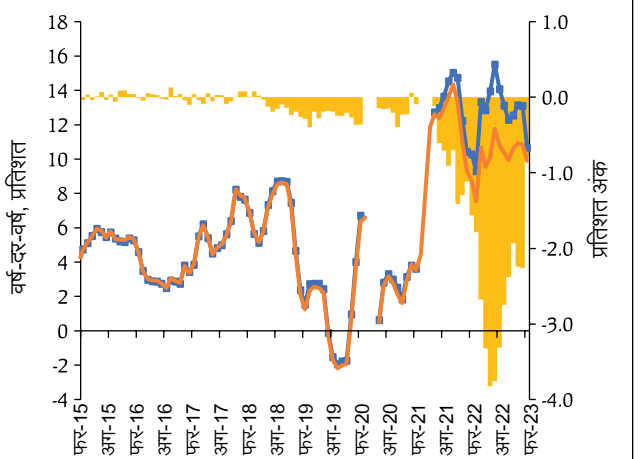

टिप्पणी: अंतराल, प्रकाशित मुद्रास्फीति से व्युत्पन्न मुद्रास्फीति को घटाने पर प्राप्त मान को दर्शाता है।
स्रोत: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ); और लेखकों के अनुमान।

बदलाव आया होगा (वर्तमान भार 2011-12 के उपभोग व्यय सर्वेक्षण से लिया गया है)। उन राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में ईंधन समूह में भारांक के पुनर्वितरण की आवश्यकता। यह 2021 के बाद से राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में ईंधन सूचकांक की परिवर्तनशीलता में वृद्धि से स्पष्ट है (चार्ट 5)। राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में वार्षिक औसत ईंधन सूचकांक में विचलन के सह-गुणांक भी 2013 में 6.6 प्रतिशत से बढ़कर 2020-2021 के दौरान 15 प्रतिशत और 2022-2023 में 19 प्रतिशत से अधिक हो गया।

जनवरी और फरवरी 2023 में प्रकाशित सीपीआई हेडलाइन मुद्रास्फीति में देखा गया बड़ा विचलन मद स्तर सीपीआई डेटा के ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण से प्राप्त हुआ था, जो अनाज उप-समूह में मुद्रास्फीति में तीव्र विचलन के कारण आया था। वर्तमान पद्धति का अनुसरण करते हुए, जब कतिपय राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के गेहूं और चावल की कीमतों को नि:शुल्क किया गया था, तो ऐसी शून्य कीमत वाली मदों के भारांक को उन राज्यों में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में निकटतम श्रेणी में स्पष्ट रूप से पुनर्वितरित किया गया था, जिसका अर्थ है पीडीएस से इतर अथवा खुले बाजार के मूल्यों को अधिक महत्व देना। खुले बाजार में गेहूं और चावल की कीमतों में तीव्र वृद्धि के परिदृश्य में, उन राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में अनाज की मुद्रास्फीति और बढ़ गई है। तथापि, मद स्तर सूचकांकों को राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में क्षैतिज एकत्रीकरण द्वारा संकलित किया गया था, जिसमें एक राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अनुपलब्ध कीमतों के लिए भारांक को अन्य राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों की सार्वजनिक वितरण प्रणाली मदों को पुनर्वितरित किया गया था, न कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली और सार्वजनिक वितरण प्रणाली से भिन्न मदों के भार के बीच। परिणामस्वरूप, जब राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों के स्तर के समग्र सीपीआई डेटा को अखिल भारतीय हेडलाइन समग्र सूचकांक और मुद्रास्फीति पर पहुंचने के लिए एकत्र किया गया, तो यह सीपीआई मद स्तर डेटा के ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण से प्राप्त आंकड़ों की तुलना में काफी अधिक निकला (चार्ट 6)।

प्रकाशित हेडलाइन सीपीआई मुद्रास्फीति और ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण द्वारा प्राप्त मुद्रास्फीति के बीच मुद्रास्फीति विचलन के

चार्ट 5: राज्य-वार सीपीआई ईंधन सूचकांक का वितरण

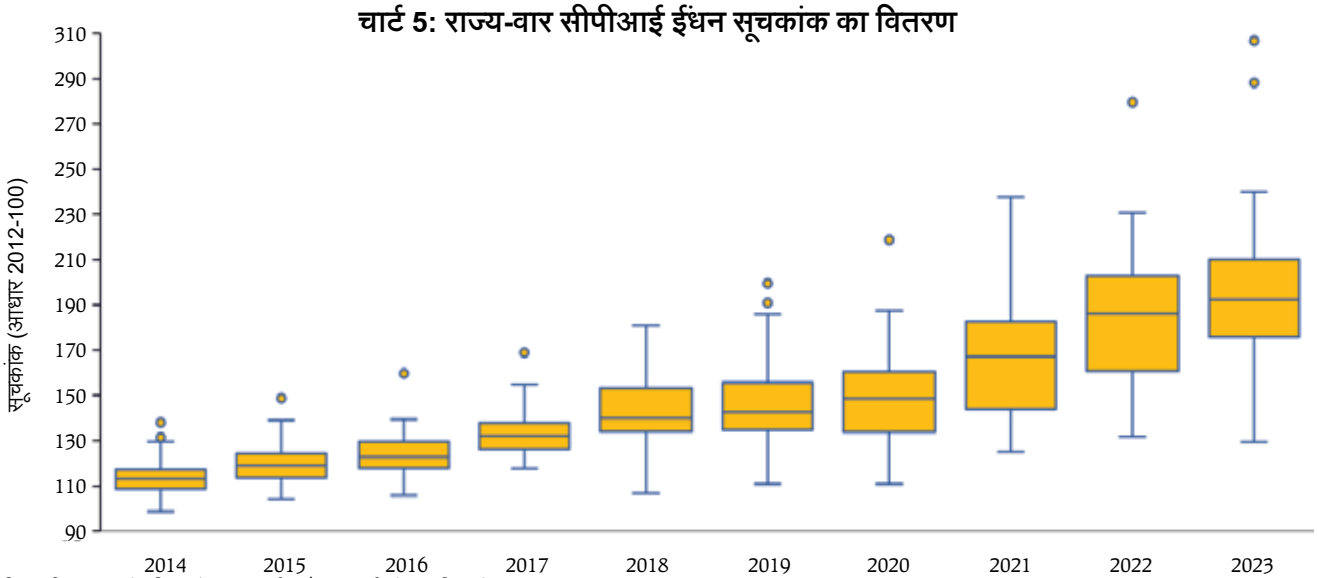

टिप्पणी: 2023 के लिए, डेटा जनवरी और फरवरी से संबंधित है।
स्रोत: एनएसओ; और लेखकों के अनुमान।

चार्ट 6: सीपीआई अनाज मुद्रास्फीति - प्रकाशित और व्युत्पन्न

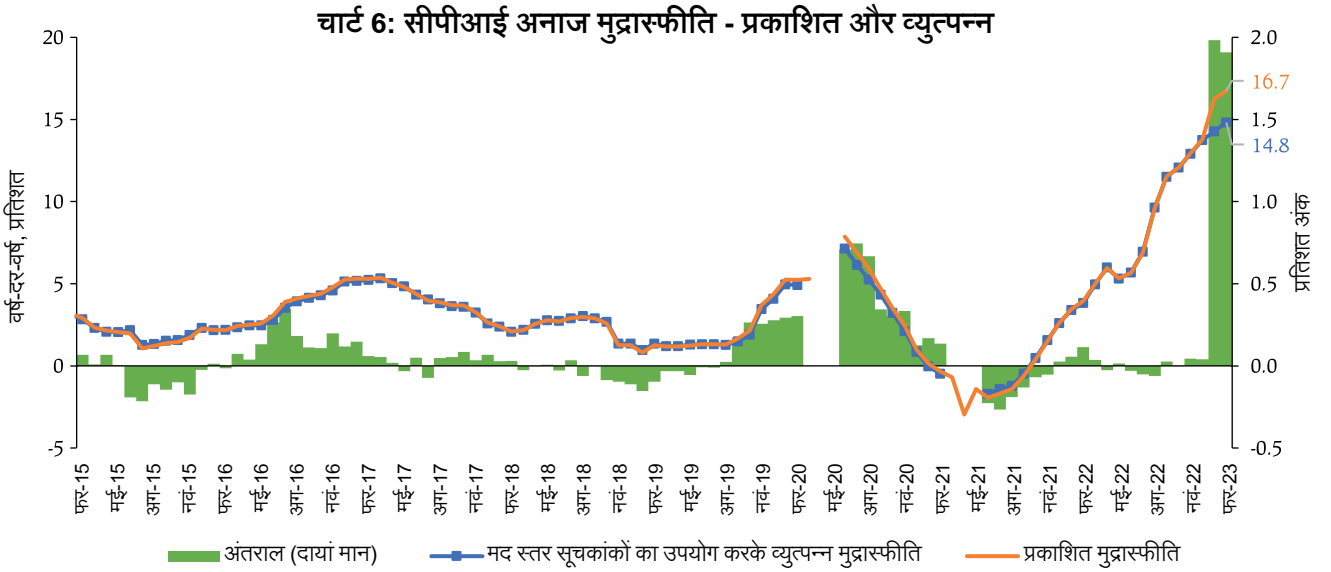

टिप्पणी: 2023 के लिए, डेटा जनवरी और फरवरी से संबंधित है।
स्रोत: एनएसओ; और लेखकों के अनुमान।

अपघटन से पता चलता है कि इस तरह के विचलन हमेशा मुख्य रूप से अनुपलब्ध कीमतों के कारण मौजूद थे। कोविड-पूर्व अवधि में खाद्य, ईंधन और विविध समूहों से विचलन आ रहा था। हालांकि, यह द्विदिशी और अपेक्षाकृत मामूली था। 2021 के बाद से, विचलन दीर्घकालिकता बढ़ गई है, और प्रकाशित हेडलाइन मुद्रास्फीति, निम्न प्रकाशित ईंधन समूह मुद्रास्फीति (व्युत्पन्न ईंधन मुद्रास्फीति की तुलना में) के कारण उपयोगकर्ता व्युत्पन्न मुद्रास्फीति की तुलना में व्यवस्थित रूप से कम थी। जनवरी और फरवरी 2023 में, सीपीआई ईंधन समूह मुद्रास्फीति में विचलन बना रहा, लेकिन इसके प्रभाव को (व्युत्पन्न अनाज मुद्रास्फीति की तुलना में) प्रकाशित अनाज मुद्रास्फीति की अधिकता द्वारा ऑफसेट किया गया, जिसके परिणामस्वरूप वस्तुओं के ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण द्वारा प्राप्त समग्र मुद्रास्फीति से प्रकाशित मुद्रास्फीति अधिक रही (चार्ट 7)।

चार्ट 7: सीपीआई मुद्रास्फीति विचलन में योगदान (प्रकाशित - व्युत्पन्न)

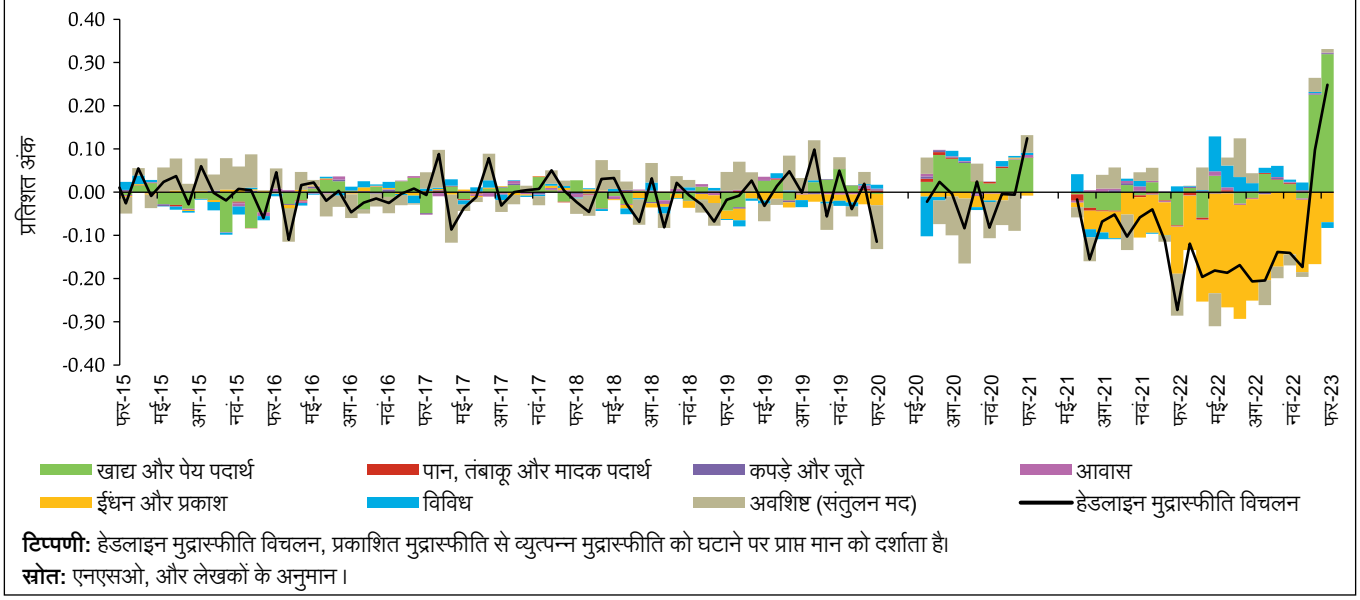

टिप्पणी: हेडलाइन मुद्रास्फीति विचलन, प्रकाशित मुद्रास्फीति से व्युत्पन्न मुद्रास्फीति को घटाने पर प्राप्त मान को दर्शाता है।
स्रोत: एनएसओ, और लेखकों के अनुमान।

जनवरी 2015 से फरवरी 2020 की कोविड-19 पूर्व अवधि के लिए हेडलाइन सीपीआई मुद्रास्फीति के लिए शून्य माध्य विचलन के शून्य परिकल्पना के लिए मुद्रास्फीति विचलन के टी-टेस्ट को खारिज नहीं किया जा सकता है। हालांकि, पूरी अवधि (जनवरी 2015 से फरवरी 2023) में शून्य माध्य विचलन की शून्य परिकल्पना को जून 2020-फरवरी 2023 की अवधि के दौरान उत्पन्न एक तरफा बड़े विचलन के कारण खारिज कर दिया गया है, इसका कारण ईंधन समूह है (सारणी 1)।

एक अन्य प्रमुख पहलू यह है कि 'अवशिष्ट (संतुलनशील मद)' शब्द से प्रकाशित सीपीआई और व्युत्पन्न सीपीआई मुद्रास्फीति के बीच विचलन में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह घटक, समग्र प्रकाशित सूचकांक में उप-समूह/ समूह सूचकांकों की गैर-संकलनीयता से उत्पन्न विचलन को दर्शाता है। अखिल भारतीय ग्रामीण, शहरी सूचकांकों और हेडलाइन सीपीआई पर पहुंचने के लिए राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश स्तर के सूचकांकों के क्षैतिज एकत्रीकरण की पद्धति के कारण, समूहों/ उप-समूहों (सीपीआई मद स्तर सूचकांक नहीं) में ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण से हेडलाइन मुद्रास्फीति प्रिंट के साथ विचलन भी होगा। हालांकि, हाल के वर्षों में उप-समूह/ समूह स्तर की तुलना में सीपीआई मदों के ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण के लिए विचलन अधिक हैं।[7]

सारणी 1: सीपीआई मुद्रास्फीति विचलन का टी-टेस्ट (प्रकाशित से व्युत्पन्न घटाने पर प्राप्त)

(एचओ: अर्थात माध्य मुद्रास्फीति विचलन = 0)

सीपीआई-प्रमुख समूह	कोविड-पूर्व अवधि (जन-2015 से फर-2020)	सीपीआई-प्रमुख समूह (जून-2020 से फर-2023)	कोविड-पूर्व अवधि (जन-2015 से फर-2023)
सीपीआई-खाद्य			
टी	-1.84	1.08	0.11
पी-मान	0.07	0.29	0.91
सीपीआई-पान/ तंबाकू			
टी	0.90	-0.81	-0.29
पी-मान	0.37	0.43	0.77
सीपीआई-वस्त्र			
टी	0.00	1.40	0.89
पी-मान	1.00	0.17	0.38
सीपीआई-ईंधन			
टी	-4.28*	-6.17*	-5.12*
पी-मान	0.00	0.00	0.00
सीपीआई-आवासीय			
टी	-0.62	1.51	0.34
पी-मान	0.54	0.14	0.73
सीपीआई-विविध			
टी	-0.28	1.09	0.85
पी-मान	0.78	0.28	0.40
सीपीआई-समग्र			
टी	-0.74	-3.71*	-3.28*
पी-मान	0.46	0.00	0.00

*: 1 प्रतिशत महत्व के स्तर पर शून्य परिकल्पना (औसत मुद्रास्फीति विचलन = 0) की अस्वीकृति को दर्शाता है। टी विद्यार्थी के टी स्टैटिस्टिक आंकड़े को दर्शाता है।

स्रोत: लेखकों के अनुमान।

V. नीति निर्माता की दुविधा

जब सूचकांक राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय द्वारा तैयार किया जाता है, तो उपयोगकर्ता को इसका पुनर्निर्माण क्यों करना चाहिए? उपयोगकर्ता व्युत्पन्न सूचकांक मायने रखते हैं क्योंकि मुद्रास्फीति के उपायों के निर्माण के लिए अधरोर्ध्व (बॉटम-अप) दृष्टिकोण (वस्तुओं/ उप-समूहों/ समूहों से लेकर समग्र मुद्रास्फीति तक) का उपयोग करते हुए ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण की सबसे पहले आवश्यकता होती है, जिसके लिए ऊर्ध्वाधर एकत्रित उप-समूहों/ समूहों/ वस्तुओं की आवश्यकता होती है जैसा कि अंतर्निहित या मुख्य मुद्रास्फीति उपाय, और गैर-अतिरिक्तता के मामले में अक्सर, इन अंतर्निहित मुद्रास्फीति उपायों के निर्माण के लिए अपनाई गई पद्धति के आधार पर मुद्रास्फीति दर और दिशात्मक रुझान अलग-अलग होते हैं। दूसरे, यह मुद्रास्फीति के पूर्वानुमानों में अनिश्चितता लाता है।[8] क्षैतिज बनाम ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण के मुद्दे मुख्य रूप से मुद्रास्फीति के तत्काल पूर्वानुमान की स्थिति के दौरान सामने आते हैं, जो अत्यधिक असंगठित अधरोर्ध्व (बॉटम-अप) दृष्टिकोण का अनुसरण करता है। किसी महीने के लिए सीपीआई आमतौर पर अगले महीने की 12 तारीख को जारी की जाती है। हालाँकि, आधिकारिक सीपीआई जारी होने से पहले,

[7] राष्ट्रीय मद सूचकांकों के निर्माण के लिए पहले चरण में, मद सूचकांकों को क्षैतिज रूप से एकत्र किया जाता है, और अनुपलब्ध कीमतों के कारण राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में एक ही मद को क्षैतिज पुनर्भारित किया जाता है। राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश स्तर सीपीआई के मामले में पहले चरण में, प्रत्येक राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश के लिए उप-समूहों और इसके बाद समूहों में मद सूचकांकों का ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण होता है और अनुपलब्ध/ शून्य कीमतों के परिणामस्वरूप समान मद-खंड संरचना से संबंधित अन्य मदों में भारों का ऊर्ध्वाधर पुनर्वितरण होता है। इन राज्य/ केंद्र शासित प्रदेशों के उप-समूह/ समूह/ समग्र सूचकांकों को संबंधित राष्ट्रीय स्तर के सूचकांकों तक पहुंचने के लिए सभी राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में क्षैतिज रूप से एकत्रित किया जाता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए यही समान प्रक्रिया पृथक रूप से अपनाई जाती है।

[8] एफआईटी के तहत आरबीआई में मुद्रास्फीति पूर्वानुमान प्रक्रिया का विवरण, मुद्रा और वित्त संबंधी रिपोर्ट, 2020-21, आरबीआई में उपलब्ध है।

चुनिंदा खाद्य/ ईंधन वस्तुओं की कीमतों पर उच्च आवृत्ति जानकारी दैनिक आधार पर उपलब्ध होती है। इन उच्च आवृत्ति डेटा के आधार पर, तात्कालिक अनुमान लगाने में (नाउकास्टिंग) में सीपीआई में वस्तुओं, विशेष रूप से भोजन और ईंधन को मूल्य गति निर्दिष्ट करना शामिल है। फिर इन्हें खाद्य उप-समूहों और समग्र खाद्य/ ईंधन मुद्रास्फीति पर पहुंचने के लिए ऊर्ध्वाधर रूप से एकत्रित किया जाता है। हालाँकि, जिस तरह से सीपीआई का निर्माण किया गया है, उसे देखते हुए, गणना की गई और प्रकाशित हेडलाइन मुद्रास्फीति के बीच अंतर होना तय है, तब भी जब किसी मद स्तर पर पूर्वानुमानित सूचकांक और संबंधित प्रकाशित सूचकांक काफी हद तक मेल खाते हों - जनवरी और फरवरी 2023 सीपीआई प्रिंट एक हालिया उदाहरण था। यह पूर्वानुमानकर्ताओं के लिए अनिश्चितता का एक अतिरिक्त स्तर जोड़ता है, विशेष रूप से अनुपलब्ध डेटा के प्रभाव, कोविड-19 जैसे आघात के दौरान भार के पुनर्वितरण और मूल्यित वस्तुओं की अनुपलब्धता को कितना महत्व देना है।

VI. संस्तुति और निष्कर्ष

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के लिए एनएसओ द्वारा उपयोग की जाने वाली विधियों के अध्ययन से पता चलता है कि यह इसके डिजाइन, उत्पाद वर्गीकरण, बाजार चयन, मूल्य संग्रहण और डेटा प्रसार सहित यह विधि अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं से ली गई है। हालाँकि, अखिल भारतीय सूचकांकों पर पहुंचने के लिए, एक ओर मद स्तर सूचकांकों के लिए सीपीआई के एकत्रीकरण की वर्तमान दो विधियाँ और दूसरी ओर उप-समूह/ समूह और अखिल भारतीय स्तर पर सूचकांक, कीमतें और उनके पूर्वानुमान का आकलन चुनौतीपूर्ण बना देते हैं, खासकर जब आधार संशोधन में काफी समय अंतराल हो। इस शोध में ऐसी चुनौतियों के आकार और हाल की अवधि में इसकी बढ़ती घटनाओं पर विचार किया गया है।

यदि एनएसओ सेक्टर और राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश स्तर के एकत्रीकरण के माध्यम से अखिल भारतीय मद स्तर के सूचकांकों पर पहुंचता है और उसके बाद अखिल भारतीय मद सूचकांकों को उच्च स्तरीय समुच्चय में एकत्र करने के साथ आगे बढ़ता है - यानी, उप-समूहों और शीर्षक के साथ अखिल भारतीय समूह सूचकांकों में, एकत्रीकरण पद्धति को प्रकाशित उप-समूह/ समूह स्तर के सूचकांकों और उपयोगकर्ताओं के मद स्तर के एकत्रीकरण के बीच समायोजित किया जा सकता है। यह एकत्रीकरण विधि सीपीआई के निर्माण के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप होगी। अखिल भारतीय क्षेत्रीय सूचकांकों पर पहुंचने के लिए एक समान दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है। कीमतों और जीवनयापन की लागत के आंकड़ों पर तकनीकी सलाहकार समिति (एसपीसीएल पर टीएसी) जो सीपीआई की तैयारी पर एनएसओ का मार्गदर्शन करती है, एकत्रीकरण पद्धति में बदलाव पर विचार कर सकती है ताकि सूचकांक को नीति विश्लेषण के लिए अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

वर्तमान में एनएसओ के सीपीआई निर्देशिका में शून्य कीमतों के उचित उपयोग पर कोई मार्गदर्शन नहीं है - जैसे कि हाल की अवधि में जब पीडीएस की कीमतें शून्य कर दी गई थीं। अंतरराष्ट्रीय प्रथाओं से प्रेरणा लेते हुए, ऐसे मामलों को शून्य-कीमतों और अनुपलब्ध कीमतों के रूप में नहीं माना जा सकता है।

अंत में, 2012 का वर्तमान सीपीआई आधार 2011-2012 के किए गए उपभोग व्यय सर्वेक्षण से लिया गया है। कीमतें एकत्र करने के लिए दुकानों की पहचान करने के लिए बाजार सर्वेक्षण और भी पुराना है। सीपीआई उपभोग समूह को वर्तमान घरेलू उपभोग व्यवहार के लिए प्रासंगिक बनाने और अनुपलब्ध/ अल्प मूल्य उद्धरणों की घटनाओं को रोकने के लिए सीपीआई को हाल की अवधि में पुन: आधार बनाने हेतु नए सीईएस आयोजित करने के प्रयासों में तेजी लाई जा सकती है। हर पांच साल में समकालिक सीईएस, मूल्य और बाजार सर्वेक्षण के साथ समय पर आधार संशोधन नीति निर्माता की चिंताओं को दूर कर सकता है।

संदर्भ:

Australian Bureau of Statistics (2018), "*Consumer Price Index: Concepts, Sources and Method*".

Central Statistics Office (2014), "*Report of the Technical Advisory Committee on Statistics of Prices and Cost of Living*", Prices & Cost of Living Unit, National Accounts Division.

Central Statistics Office (2014a), "*Consumer Price Index: Changes in the Revised Series (Base Year 2012 = 100)*".

Das, P. and George, A. T. (2017), "Comparison of Consumer and Wholesale Prices Indices in India: An Analysis of Properties and Sources of Divergence", *RBI Working Paper Series, WPS (DEPR):* 05 / 2017.

European Union (2022), "*Guide on Multilateral Methods in the Harmonised Index of Consumer Prices*".

International Monetary Fund, International Labour Organization, Statistical Office of the European Union (Eurostat), United Nations Economic Commission for Europe, Organisation for Economic Co-operation and Development, The World Bank (2020), "*Consumer Price Index Manual: Concepts and Methods*".

Office for National Statistics (2019), "*Consumer Prices Indices Technical Manual*", United Kingdom.

Reserve Bank of India (2021), "Monetary Policy Decision Making Process", Chapter 3, *Report on Currency and Finance 2020-21*, February.

Statistics Canada (2023), "*The Canadian Consumer Price Index Reference Paper*", February.

United Nations Economic Commission for Europe, International Labour Office, International Monetary Fund, Organisation of Economic Co-operation and Development, Statistics Office of the European Communities, World Bank and Office for National Statistics, United Kingdom (2009), "*Practical Guide to Producing Consumer Price Indices*".

US Bureau of Labor Statistics (2020), "*Consumer Price Index, Handbook of Methods*", Last Modified November 24, 2020.

Verma A. (2016), "Formula Does Matter - Finding the Right Prices", *Economic & Political Weekly*, Vol. LI No. 16, April 16.

अनुबंध

सारणी ए1: (प्रकाशित मद स्तर सूचकांकों के) प्रकाशित सीपीआई हेडलाइन, समूह और उप-समूह मुद्रास्फीति और ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण का उपयोग करके व्युत्पन्न मुद्रास्फीति के बीच अंतर: जनवरी 2015 से फरवरी 2023

(प्रतिशत अंक)

मद का विवरण	अधिकतम	न्यूनतम	औसत
अनाज और उत्पाद	1.98	-0.27	0.10
मांस और मछली	0.16	-0.13	0.00
अंडा	0.16	-0.16	0.00
दूध और उत्पाद	0.12	-0.10	0.00
तेल और वसा	0.13	-0.13	0.00
फल	1.30	-1.88	-0.07
सब्ज़ियां	1.13	-1.63	-0.03
दालें और उत्पाद	0.11	-0.12	0.00
चीनी और कन्फेक्शनरी	0.59	-1.23	-0.14
मसाले	0.11	-0.09	0.00
अल्कोहल-रहित पेय पदार्थ	0.12	-0.14	0.00
तैयार भोजन, नाश्ता, मिठाइयां आदि	0.14	-0.14	0.00
भोजन एवं पेय पदार्थ	**0.65**	**-0.21**	**0.00**
पान, तंबाकू, नशीले पदार्थ	**0.27**	**-0.53**	**0.00**
कपड़े	0.11	-0.08	0.00
जूते	0.09	-0.14	0.00
कपड़े और जूते	**0.08**	**-0.09**	**0.00**
आवासीय	**0.11**	**-0.09**	**0.00**
ईंधन और प्रकाश	**0.13**	**-3.82**	**-0.49**
घरेलू सामान/ सेवाएं	0.57	-0.70	0.01
स्वास्थ्य	0.11	-0.13	0.00
परिवहन/ संचार	0.36	-0.46	0.00
मनोरंजन और मन-बहलाव	1.68	-1.03	0.07
शिक्षा	0.49	-0.12	0.01
व्यक्तिगत देखभाल/ प्रभाव	0.54	-0.27	0.00
विविध	**0.30**	**-0.34**	**0.01**
सभी समूह	**0.25**	**-0.27**	**-0.03**

सारणी ए2: प्रकाशित सीपीआई हेडलाइन, समूह और उप-समूह सूचकांक और व्युत्पन्न सूचकांकों के बीच अंतर: जनवरी 2014 से फरवरी 2023

मद का विवरण	अधिकतम	न्यूनतम	औसत
अनाज और उत्पाद	-0.17	-4.43	-0.84
मांस और मछली	0.10	-0.21	0.00
अंडा	0.00	-0.20	0.00
दूध और उत्पाद	0.10	-0.09	0.00
तेल और वसा	0.11	-0.10	0.00
फल	4.05	-0.33	1.15
सब्ज़ियां	3.48	-0.13	0.28
दालें और उत्पाद	0.11	-0.10	-0.01
चीनी और कन्फेक्शनरी	1.61	-0.25	0.67
मसाले	0.07	-0.10	0.01
अल्कोहल-रहित पेय पदार्थ	0.18	-0.14	-0.01
तैयार भोजन, नाश्ता, मिठाइयां आदि	0.21	-0.13	0.00
भोजन एवं पेय पदार्थ	**0.39**	**-0.67**	**-0.04**
पान, तंबाकू, नशीले पदार्थ	**0.39**	**-0.55**	**-0.02**
कपड़े	0.08	-0.13	-0.02
जूते	0.11	-0.10	0.00
कपड़े और जूते	**0.09**	**-0.12**	**-0.01**
आवासीय	**0.07**	**-0.10**	**-0.01**
ईंधन और प्रकाश	**7.93**	**-0.09**	**1.10**
घरेलू सामान/ सेवाएं	1.03	-0.08	0.03
स्वास्थ्य	0.17	-0.10	0.01
परिवहन/ संचार	0.52	-0.16	-0.04
मनोरंजन और मन-बहलाव	1.66	-1.06	-0.10
शिक्षा	0.75	-0.10	0.00
व्यक्तिगत देखभाल/ प्रभाव	0.84	-0.18	-0.03
विविध	**0.40**	**-0.15**	**-0.02**
सभी समूह	**0.51**	**-0.11**	**0.05**

टिप्पणी: सूचकांक में अंतर ऊर्ध्वाधर एकत्रीकरण का उपयोग करके प्राप्त सूचकांक और प्रकाशित सूचकांक के बीच पूर्ण अंतर है। सूचकांक निकालते समय, जिस वस्तु के लिए सूचकांक उपलब्ध नहीं है, उसका भार समायोजित कर दिया गया है।